श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'रागदरबारी' में चित्रित व्यंग्यात्मक यथार्थ

कैलाश नाथ यादव ,

शोधार्थी –हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

हर युग में लिखा गया साहित्य तत्कालीन सामाजिक परिवेश की भूमिका पर रचा जाता है। उसमें अपने समय–समाज का अक्स साफ देखा जा सकता है। एक जागरूक साहित्यकार अपने समाज में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं, परम्पराओं, संस्कृति आदि का साक्षी होता है, और उन्हीं में से अपनी रचनाकर्म के लिए कथ्य चुनता है। श्रीलाल शुक्ल अपने परिवेश और समाज से रूबरू थे, और अपनी पैनी दृष्टि से उसको देखते थे इस यथार्थ परख व्यंग्य लेखन की परम्परा शुक्ल जी के अपने अवदान का सही मूल्यांकन करते हुए उन्होंने बदलती सामाजिक, पारिवारिक स्थितियों, मूल्यों के विघटन नारी जीवन की विसंगतियाँ पूँजीवाद एवं अपराध जगत के सम्बन्धों आदि पर शुक्ल जी अपने उपन्यास 'राग दरबारी' के माध्यम से बेबाकी से विवेचन किया है।

Keywords: *श्रीलाल शुक्ल_व्यंग्य, यथार्थ, विघटन, सामाजिक विसंगतियाँ।*

श्रीलाल शुक्ल जी हिन्दी के उन अप्रतिम व्यंग शिल्पियों मे से एक है, जिनके समूचे लेखन में व्यंग्यात्मकता धड़कन की तरह मौजूद है। उनकी रचनात्मकता अमोघ थी, जैसे प्रकृति प्रदत्त हो, साथ ही उनमें अपने लक्ष्य से विचलित न होते हुए पूरी ईमानदारी से एक सार्थक लेखन करते रहने की अपूर्व क्षमता थी। अपनी यथार्थ परख दृष्टि से उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। जिनका जीता–जागता उपन्यास 'राग दरबारी' है। इसमें दो राय नहीं कि रागदरबारी के एक–एक दृश्य, एक–एक संवाद अपने जादुई पैनेपन से यथार्थ को इतनी सहजता से जीवित रखते है। श्रीलाल शुक्ल स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग व गाँधीवाद के बिखर जाने के परिणाम स्वरूप ग्रामांचल की ओर जाते हैं। 'राग दरबारी' में स्वतंत्र भारत के सामाजिक यथार्थ की व्यंग्यात्मक प्रस्तुति का अभिनव प्रयोग हिन्दी पाठक को अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है।

उपन्यास का केन्द्र उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में बसा एक कस्बेनुमा गॉव है – शिवपालगंज, जिसे स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय गॉव या समाज का प्रतीक समझा जा सकता है। स्वातंत्रयोत्तर जनतंत्रीय व्यवस्था को बेनकाब कर उसके वास्तविक स्वरूप को सामने लाने वाले इस उपन्यास का आरम्भ ही पाठक की जिज्ञासा को तीव्रता के साथ जाग्रत कर देता है–"शहर का किनारा"। उसे छोड़ते ही भारतीय देहात का महासागर शुरू हो जाता था। वहीं एक ट्रक खड़ा था। उसे देखते ही यकीन हो जाता था। इसका जन्म केवल सड़कों के बलात्कार करने लिए हुआ है।"[1] उपन्यास की कथा बहुत लम्बी चौड़ी नहीं है। शिवपालगंज को केन्द्र बनाकर छोटे–छोटे कस्बों प्रसंगों के ताने–बाने से स्वतंत्र्योत्तर भारतीय गाँव के यथार्थ को उसकी समस्त कुरूपताओं और विडम्बनाओं के साथ मूर्तरूप दिया गया है।

श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यास 'राग दरबारी' के माध्यम से जो सामाजिक विसंगतियाँ थी, चाहे वह सामाजिकता हो। जिसमें गाँव की आर्थिक, राजनीतिक समस्या या भ्रष्टाचार की समस्या सबको राग दरबारी उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है। लेखक ने अपने कई व्यंग्य लेखों और उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था की पर्तें उधेड़ी हैं। खासकर ' राजदरबारी'में उन्होंने शिक्षा व्यवस्था के बीमारू स्वरूप पर करारा व्यंग्य किया है। इस उपन्याय में ट्रक ड्राइवर भी रंगनाथ की तालीम पर व्यंग्य मारता है–"वर्तमान शिक्षा पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतियाँ है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।"[2]

श्रीलाल शुक्ल ने शिक्षा जगत में व्याप्त विसंगतियों पर करारा व्यंग्य किया है। रंगनाथ के मामा वैद्यजी के शिवपालगंज स्थित दरबार को शक्ति का प्रतीक बनाकर उनके द्वारा संचालित स्वातंत्र्योत्तर भारत की विकास योजनाओं को लागू करने वाली तीन प्रमुख संस्थाओं के यथार्थ को प्रस्तुत किया है– कालेज की प्रबन्ध समिति, कोआपरेटिव यूनियन और ग्राम सभा है लेकिन अधिक ध्यान छंगामल इंटर कालेज है इसी पर राजनीति केन्द्रित है। छंगामल इंटर कालेज ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने में पूरी तरह कामयाब रहा है। छात्रों का समूह भी वहाँ विद्यालय में पढ़ने के बजाय अधिक ध्यान खेलकूद फिल्मी पुस्तकें पढ़ना, मारपीट करने में अधिक रूचि लेना उनका विद्यालय आने का उद्देश्य था। विद्यालय आने पर शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर सरकारी योजनाओं द्वारा प्रदत्त अनुदान प्राप्त करना है। खासकर 'राग दरबारी' में उन्होंने शिक्षा व्यवस्था के बीमारू स्वरूप पर करारा व्यंग्य किया है। शिक्षा का क्षेत्र आज हमारे देश में मोटी कमाई के रूप में देखा जाता है। राजनीति और पूँजी ने जब से इसे दखल किया है, इसका स्वरूप बदल सा गया है। हमारा शिक्षक ट्यूशन करता है, धंधा करता है, दुकान करता है, खेती–बाड़ी करता है इसके बाद उसके पास विद्यार्थियों के लिए समय कहाँ बचता है।

'राग दरबारी' के इंटरमीडिएट पास विद्यार्थियों का मनोभाव शुक्ल जी इस प्रकार व्यक्त करते हैं–"हम शान्ति निकेतन से भी आगे हैं, हम असली भारतीय विद्यार्थी है, हम नहीं जानते बिजली क्या है, नल क्या है, पक्का फर्श किसको कहते हैं, सेनिटरी फिटिंग किस चिड़ियाँ का नाम है। हमने विलायती तालीम तक देशी परम्परा में पायी है और इसलिए हमे देखो, हम आज भी उतने ही प्राकृत हैं, हमारे इतना पढ़ लेने पर भी हमारा पेशाब पेड़ के तने पर ही उतरता है।"[3]

श्री लाल शुक्ल ने छंगामल इंटर कालेज को भ्रष्ट राजनीति और सत्ता के व्यभिचार का अड्डा बताया है। शिक्षा की शोचनीय हालत के लिए लेखक, शिक्षक और प्रिंसिपल दोनों को संयुक्त रूप से दोषी मानता है। उद्देश्यहीन शिक्षा, व्यक्तित्व के विकास के अपेक्षा व्यक्तित्व के लिए घातक होती है। उसका उदाहरण छंगामल विद्यालय के शिक्षक और छात्र हैं। इस विद्यलाय की बागडोर जिस मठाधीश के हाथ में है वे तथाकथित रूप से सेवक है। अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए वे हर प्रकार का कार्य कर सकते हैं। व्यंग्यात्मक लहजे में विद्यालयों के दुदर्शा का वर्णन करते हुए 'राग दरबारी' में शुक्ल जी लिखते हैं–"सामुदायिक मिलन केन्द्र ग्राम सभा के नाम पर लिए गए पैसे से बनवाया गया था। पर उसमें प्रिंसिपल का दफ्तर था और कक्षा 11 व 12 की पढ़ाई होती थी। अस्तबल जैसी इमारतें श्रमदान से बनी थी। टीन शेड किसी फौजी छावनी के भग्नावशेषों को रातो–रात हटा कर खड़ा किया गया था। जुता हुआ उसर कृषि विज्ञान के पढ़ाई के काम आता था। उसमें जगह–जगह उगी हुई ज्वार प्रिंसिपल के भैस के काम आती थी।"[4]

एक सजग व्यंग्यकार जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली राजनीति में फैले इस छल–छद्म और अन्तर्विरोधों को न सिर्फ व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देता है, बल्कि उसके विरूद्ध आक्रोश और क्षोभ भी प्रकट करता है। श्री लाल शुक्ल ने राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त इन तमाम विसंगतियों पर कड़ा प्रहार किया है इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' नेहरू युग के बाद का है, यह समय मोह भंग का था। भारतीय राजनीति में बड़ा परिवर्तन आ रहा था। उस समय के राजनीति के गंदगी गाँवों मे भी पहुँच गई थी। पंचायतों, ग्राम सभाओं, सहयोग समिति और स्कूलों–कालेजों की प्रबन्ध सहमतियों में चुनावों के वे सभी हथकंडे और घृणित उपाय काम में लाये जाने लगे जो विधानसभा या संसद के चुनाव में लाये जाते थे। 'राग दरबारी' में सनीचर जैसे नेताओं की उम्र को लेकर श्रीलाल शुक्ल यथार्थ रूप से व्यंग्य करते हुए कहते हैं–"भैया लठैती का काम कोई असेम्बली का काम तो है नहीं। असेम्बली में जितने बूढ़े होते जाओ, जितनी अक्ल सठियाती जाये उतनी ही तरक्की होती है, यही हरनाम सिंह को देखो चलने को उठते हैं तो लगता है, गिरकर मर जायेगें पर दिन–प्रतिदिन उनकी पूछ बढ़ रही है। यही लठैती में कल्ले के जोर की बात है। जब तक चले, तब तक चले, तब हलाल हो गये।"[5]

इस तरह वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट चरित्र को उजागर करते हुये उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार, सत्ता लोलुपता, गुटबाजी भाई–भतीजावाद, चाटुकारिता आदि उन तमाम प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है जिनके कारण उसका स्वरूप निरन्तर विकृत होता जा रहा है। श्रीलाल शुक्ल का सरोकार समाज के ग्रामीण, किसान, मजदूर, श्रमिक, दलित एवं शोषितों के प्रति स्पष्ट रूप से रहा है। वे आम आदमी को प्राथमिकता देते हैं। सामन्ती और राजप्रथा के माध्यम से गरीबों, बेबस और असहाय लोगों का हमारे देश में बहुत शोषण हुआ है। इनके शोषण के तरीके भी कई तरह के हैं। कभी आर्थिक रूप से नियम कानूनों में फेर–बदल कर, कभी आम डकैती करवा कर तो कभी धोखाधड़ी करके, उनकी पूरी सम्पत्ति लूट कर इन सबके बावजूद इन गरीबों के पास न तो उनके विरोध का जरिया होता और न ही उनका कोई दुख सुनने वाला। 'राग दरबारी' के शिवपालगंज की कहानी वही है, वहाँ वही पुराने स्वर हैं, अमीर और गरीब के स्तर हैं, वही जाति का वर्चस्व है, ब्रह्मण, बनिया, ठाकुर, शूद्रों के साथ वही दोयम दर्जे को व्यवहार किया जाता है। उनके लिए बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव बना हुआ है जैसे की किसी अन्य गाँवों में होता है। श्रीलाल शुक्ल जी लिखते हैं–"एक जमाना था, किसी भी वाभन, ठाकुर के निकलने पर वहाँ के लोग अपने दरवाजों पर उठकर खड़ें हो जाते थे। हुक्कों को जल्दी से जमीन पर रख दिया जाता था, चिलमें फेंक दी जाती थी, मर्द हाथ जोड़कर 'पाय लागी महराज' का नारा लगाते थे, औरतें बच्चों को गली से हाथ पकड़कर खींच लेती थी और कभी–कभी घबराहट से उनके पीठ पर घूसे भी बरसाने लगती थी और महराज चारों ओर आर्शीवाद लुटाते हुये और इस बात की पड़ताल करते हुए की पिछले चार महीनों में किसकी लड़की पहले के मुकाबले जवान दिखने लगी और कौन सी लड़की ससुराल से वापस आ गयी है।त्रेता युग की तरह वातावरण पर सवारी गाठते निकल जाते थे।"[6]

इस प्रकार शुक्ल जी ने 'राग दरबारी' उपन्यास में शोषण का हर स्तर पर विरोध किया है, कहीं ये सामन्ती शोषण के खिलाफ तो कहीं राजनेताओं, राजे–रजवाड़ों, पुलिस प्रशासन, न्याय व्यवस्था या पूँजीपतियों द्वारा किए जाने वाले शोषण का तीव्र विरोध करते हुए उनके षड्यन्त्रों का पर्दाफाश करते हैं। आर्थिक विसंगतियाँ व्यक्ति के जीवन में अनेक समस्याओं को जन्म देती हैं। शुक्ल जी अपने समय और समाज की गहराई से देख–परख रहे थे। उन्होनें यह भी जाना की समस्याएं आज नई नही है न ही आज पैदा हुई

है। इनकी जड़ें हमारे अतीत में भी सत्ताहीन वर्ग, अधिकारी वर्ग, पूँजीपति वर्ग, जन्मजात अमीर वर्ग आदि के पास तमाम सुख–सुविधाएं होती हैं। अपनी सुख–सुविधाओं को पूरा करने का अपने मनोरंजन का माध्यम निम्न वर्ग एवं मध्यम वर्ग को बनाते हैं। उनसे सबकुछ करवाते हैं, जो उनके हित में है। इसके चलते निम्न वर्ग को क्या भोगना पड़ता है, इसकी कोई परवाह नहीं है। जमींदार तो अमानवीयता की हद तक गरीब किसानों, मजूदरों का शोषण करते हैं, उन्हें अपना गुलाम समझते रहे और उनसे कई प्रकार के अनैतिक काम भी करवाते हैं।

श्रीलाल शुक्ल जी दुनिया भर में हो रहे इन परिवर्तनों से बेखबर नहीं थे। अतः इन स्थितियों के बदलाव ने जिन विसंगतियों को जन्म दिया, उन पर इन्होंने करारी चोट की है। अपने 'राग दरबारी' उपन्यास में धर्म और संस्कृति पर तीखा व्यंग्य किया है। मान्यताओं का जाल हमारे समाज में लोगों के मन–मस्तिष्क में इस कदर पैठ जमायें हैं की उस पर तंज कसते हुए लोग इसका इस्तेमाल पूरे भरोसे के साथ करते हैं। 'राग दरबारी' में कहे गए इस वक्तव्य में हम देख सकते हैं कि न्याय व्यवस्था में होने वाली लेट–लतीफी और कुप्रबन्धन पर व्यंग्य करते हुए पुर्न्जन्म सम्बन्धी मान्यता का सहारा लिया है। "पुनर्जन्म के सिद्धान्त की ईजाद दीवानी अदालतों में हुई है, ताकि वादी और प्रतिवादी इस अफसोस को लेकर न मरें कि उनका मुकदमा अधूरा ही पड़ा रहा। इसके सहारे वे सोचते हुए चैन से रह सकते हैं कि मुकदमे का फैसला सुनने के लिए अभी अगला जन्म पड़ा ही है।"[7]

'राग दरबारी' में गयादीन की पुत्री बेला सिनेमा शैली में पत्र लेखन करती है और कुंवारी रहकर वैवाहिक स्थिति भोगती है। रात के अंधेरे में वह स्वयं घर की छतों को पार कर रूप्पन के पास आती है। गयादीन इस पर व्यंग्य कसता हुए कहता है–"नैतिकता समझ लो कि यही चौकी है, एक कोने में पड़ी है। सभा सोसायटी के वक्त इस पर चादर बिछा दी जाती है, तब बहुत बढ़िया दिखती है। इस पर लेक्चर फटकार दिया जाता है। यह उसी के लिए है।"[8]

रूप्पन भ्रष्ट, पतित, अनैतिक और आमनवीय नई पीढ़ी के प्रतीक है। वे समझते हैं कि प्रेम का क्षेत्र निर्वन्ध और स्वतन्त्र है। उसमें जाति–पाति, ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी की दीवारें नहीं हैं। इसलिए बेला के न मिलने पर गाँव में रहने वाली निम्न जाति के स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार करना कोई अनैतिक नहीं मानते। 'राग दरबारी' के कुँवर साहब का चरित्र भी रूप्पन बाबू के चरित्र से मेल खाता है। रेडियो में वे फिल्मी गाने सुनते हैं, पत्रिकाओं में केवल स्त्रियों का चित्र देखते हैं, गाना केवल स्त्रियों के कंठ से सुनते हैं। ऐसे अवैध संबंधों को भी शुक्ल जी ने 'राग दरबारी' में यथार्थ रूप से वर्णन किया है। रंगनाथ इतिहास का भारी विद्वान है पर ज्यादातर लोग उल्लू के पठ्ठे हो गए हैं, यूनिवर्सिटियों की हालात अस्तबल जैसी है बड़े–बड़े प्रोफेसर महज भाड़े के टट्टू हैं। उच्चतर शिक्षा पद्धति भी दोषपूर्ण बन गयी है। अनुसंधान का स्तर घटता जा रहा है। बेकारी की कुंठा मिटाने के लिए एम0ए0 के बाद स्वयं को व्यस्त रखने के लिए विद्यार्थी शोधकार्य कर रहे हैं। परिणामस्वरूप शोधकार्य घास खोदने के समान हो गया है। इस बात को व्यंग्यात्मकता से रंगनाथ कहता है कि–"कहा तो घास खोद रहा हूँ। इसी को अंग्रजी में रिसर्च कहते हैं, परसाल एम0ए0 किया था इस साल से रिसर्च शुरू की है।"[9]

इस तरह कहा जा सकता है कि शुक्ल जी ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, आदि मानव जीवन के सभी पक्षों की विसंगतियों को अपने व्यंग्य का आधार बनाया है। साहित्य की कोई भी विधा हो व्यंग्य उनकी अभिव्यक्ति की पहचान बन गयी है। जीवन का यथार्थ एवं सटीक चित्रण जहाँ इनके साहित्य में

उभरकर आया है। वही इन्हें श्रेष्ठ व्यंग्यकार भी सिद्ध करता है। वस्तुतः श्रीलाल शुक्ल अपने उपन्यास 'राग दरबारी' में सजग एवं दृष्टि सम्पन्न रचनाकार की तरह जीवन में व्याप्त विडम्बनाओं को न सिर्फ चित्रित किया है बल्कि उनके माध्यम से उन विसंगतियों को दूर करने की सजग दृष्टि और प्रेरणा दी है। व्यंग्य उनके साहित्य के केन्द्र में है। उन्होंने अपने समय के खुरदरे यथार्थ को उद्घाटित किया है।

सन्दर्भ

1. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2017 ,पृ0–05
2. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–09
3. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–14
4. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–14
5. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–46
6. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–220
7. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–27
8. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017, पृ0–80
9. शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली, संस्करण–2017 ,पृ0–06